विश्वास से भी सम्बन्ध है। इसी को सम्यक दर्शन कहा जाता है। सम्यक ज्ञान और सम्यक दर्शन के साथ अनुकूल को व्यवहार, चिन्तन और मनन को संगत करने के लिए सम्यक चरित्र की भी आवश्यकता होती है। इसलिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चारित्र तीनों को आवश्यक माना गया है। क्योंकि उमा स्वामी का कथन है कि-

''सम्यक-दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्ष-मार्गः''

जैन दर्शन में इसे त्रिरत्न के नाम से जाना जाता है और इसे मोक्ष मार्ग कहा जाता है।

(i) सम्यक दर्शन — सम्यक दर्शन का अर्थ है कि जीव को अज्ञानता तथा अविश्वास के कारण आत्मा को सच्चा स्वरूप दिखलाई नहीं पड़ता है इसलिए अनुकूल को ज्ञान के प्रति श्रद्धा और अज्ञानता के प्रति घृणा का उदय होना चाहिए। इसे ही जैन दर्शन सम्यक दर्शन कहते हैं अर्थात सत्य के प्रति श्रद्धा का भाव रखना ही सम्यक दर्शन कहा जाता है। अतः सम्यक दर्शन का अर्थ है वास्तविक विश्वास

(ii) सम्यक ज्ञान — सम्यक ज्ञान ही है जिसके द्वारा जीव और अजीव के मूल तत्वों का महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है संसार के सभी तत्वों को ज्ञान इसे सम्यक ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त होता है इसलिए सबसे श्रेष्ठ ज्ञान है सम्यक ज्ञान से अविश्वास और अन्ध-विश्वास दूर हो जाता है। सम्यक